नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जयंती की पूर्व संध्या पर परिचर्चा का आयोजन

संस्कृति विमर्श हर पीढ़ी की आवश्यकता - कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वर्धा दि. 3 अगस्त 2015: राष्ट्रकवि मैथिली शरणगुप्त अपने साहित्य के माध्यम से संस्कृति की चिंता को उजागर करते रहे हैं। आज समकालीनता के नाम पर पुरातन और सनातन प्रश्नों को भूलाया जा रहा है। पूरी दुनिया में न्यूक्लियर कचरा हम ढोते जा रहे हैं और जीवन के प्रश्न पीछे छूटते जा

रहे हैं। हर पीढ़ी को आगे ले जाने के लिए संस्कृति विमर्श एक आवश्यक उपकरण है। उक्ताशय के विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने व्यक्त किये। वे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 129वीं जयंती की पूर्व संध्या पर महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, राष्ट्रकवि स्मृति समिति एवं विद्यार्थी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में सेवाग्राम अस्पताल

के सरोजिनी नायडू सभागार में आयोजित 'हिंदी काव्य का बदलता स्वरूप -बीसवीं सदी से आज' विषय पर अध्यक्षीय वक्तव्य दे रहे थे। समारोह में विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान के अधिष्ठाता डॉ. के.आर. पातोंड, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के प्रचार मंत्री डॉ. हेमचंद्र वैद्य मंचासीन थे।

अतिथियों द्वारा महात्मा गांधी, कस्तुरबा गांधी एवं सुशीला नायर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। प्रारंभ में भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। मैथिलीशरण गुप्त के साहित्य एवं जीवन पर प्रकाश डालते हुए प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि कविता ने एक शताब्दी से नई उंचाईयां प्राप्त की है, और मैथिलीशरण का इसमें बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि आरंभिक कविता का दौर संस्कृति पर विश्वास करने वालों का दौर था। उनकी कविता में मूल्य बोध का आग्रह है। उनकी कविता के शब्द सरल है और वे आसानी से सम्प्रेषित होते है। वे संस्कृति की चिंता अपने काव्य में लगातार करते रहे है। उन्होंने कहा कि उत्तर आधुनिकता के नाम पर पूर्व का खंडित किया जाना योग्य नहीं है।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि कविता समाज में अभाव के भाव को जोड़ने का काम करती है। मैथिलीशरण गुप्त ने किसी आलोचना की परवाह किए बगैर कविता लिखी। वे जनभावनाओं को लेकर लिखने वाले कवि थे इसलिए जनता ने उन्हें राष्ट्रकवि कहा है। वे कविता के माध्यम से आदमी में मूल्य रोपित करते थे। उनमें सौंदर्य की पहचान का सूक्ष्म विवेक था और वे वैष्णव विनम्रता के धनी थे। गुप्त ने 20वीं शताब्दी की कविता का एजेंडा तय किया। विश्वविद्यालय के प्रदर्शनकारी कलाएं विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा ने कहा कि टूटते मनोबल के उस दौर में गुप्त जी ने भारत भारती जैसी कालजयी कृति की रचना की। गांधी जी के आंदोलन की वैचारिक पृष्ठभूमि उन्होंने तैयार की। वे नवजागरण के प्रारंभ काल के अग्रदूत थे। वे जितने महान कवि थे उतने उत्कृष्ट नाटक लेखक और कई नाटकों के अनुवादक भी। इस अवसर पर डॉ. अनिल दुबे ने भी समयोचित विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में काव्यपाठ प्रतियोगिता में क्रमश: प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त कवि प्रांजल सिंह, पंकज रणधीर और अंशिका कुलश्रेष्ठ को कुलपति के द्वारा पुरस्कार प्रदान किये गये। स्वागत वक्तव्य डॉ. अनुपमा गुप्ता ने दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी ने किया तथा आभार डॉ. ओ. पी. गुप्ता ने माना। अतिथियों का स्वागत, अनुपमा गुप्ता, गीता गुप्ता, दिलीप गुप्ता, शहनाज सिद्दीकी, बी. एस. मिरगे, नरेंद्र दंढारे, भव्या सेठ, आशना आदि ने किया। कार्यक्रम में हिंदी विवि के कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, प्रो. देवराज, प्रो. सूरज पालीवाल, डॉ. शोभा पालीवाल, डॉ. प्रतिभा नारंग, प्रो. अरबिंद कुमार झा, प्रो. गोपाल ठाकुर, ऋषभ मिश्र, डॉ. नारंग, प्रो. एस. कुमार, डॉ. उल्हास जाजू, डॉ. व्यास, मोहनबाबू अग्रवाल, अनिल नरेडी, मुरलीधर बेलखोडे, आनंद शुक्ला, एड. ब्रजेश मिश्र, रेणु गुलाटी सहित महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।